BYJU'S
https://byjus.com › question-answer

क तूफ़ान क्या होता है? बादलों को तूफ़ानी क्यों कहा गया है?ख साल के किन किन महीनों में ज़्यादा बादल ...

Missing: ~~बादलो विलप्त~~

Top answer · 8 votes

(क) जब नमी से युक्त nbsp;गर्म हवाएँ बारिश के साथ तेज़ी nbsp;से ऊपर ... More

06

People also ask

कवि ने बादलों को विप्लव के बादल क्यों कहा?

इसमें कवि ने बादल को विप्लव व क्रांति का प्रतीक मानकर उसका आह्वान किया है। व्याख्या - कवि कहता है कि हे क्रांतिकारी बादल ! तुम बार-बार गर्जन करते हो तथा मूसलाधार बारिश करते हो। तुम्हारी वज्र के समान भयंकर आवाज़ को सुनकर संसार अपना हृदय थाम लेता है अर्थात भयभीत हो जाता है।

http://abminter section.com › docs
बादल राग -सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

MORE RESULTS

@ASK_Classes

07

नई कविता की काव्यगत प्रवृत्तियाँ

- (1)जीवन-जगत के प्रति अगाध प्रेम एवं आस्था- सम्पादन ...
- (2)आस्था और विश्वास- सम्पादन ...
- (3)मानवतावादी यथार्थ दृष्टिकोण- सम्पादन ...
- (4)महानगरीय और ग्रामीण मानवीय सभ्यता का यथार्थ चित्रण- सम्पादन ...
- (5) घोर वैयक्तिकता- सम्पादन ...
- (6)निराशा- सम्पादन ...
- (7)नास्तिकता- सम्पादन ...
- (8)क्षणवाद का महत्त्व- सम्पादन

More items...

https://hi.m.wikibooks.org › wiki

हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)/नई कविता - विकिपुस्तक

About featured snippets   Feedback

@ASK_Classes

खंडकाव्य की कोई दो विशेषताएँ बताइए

सभी वीडियो इमेज शॉपिंग समाचार किताबें मैप Search tool

हिंदी में खोजें खंडकाव्य की कोई दो विशेषताएँ बता...

08

इसे सुनें

Answer: खण्डकाव्य में केवल एक ही छंद का प्रयोग होता है। (2) इसकी भाषा-शैलो, सरल एवं प्रवाहपूर्ण होती है। (3) खण्डकाव्य में जीवन के किसी एक भाग, एक घटना या एक चरित्र का चित्रण किया जाता है। 31 Jan 2023

https://brainly.in › question

10. खण्डकाव्य की कोई दो विशेषताएँ लिखिए | - Brainly.in

About featured snippets Feedback

@ASK_Classes

संदेह अलंकार की परिभाषा

जहाँ किसी वस्तु को देखकर संशय बना रहे, निश्चय न हो वहाँ संदेह अलंकार होता है। काव्य में जहाँ किसी वस्तु या व्यक्ति को देख कर संशय होने का चमत्कारपूर्ण वर्णन हो वहाँ सन्देह अलंकार होता है। सन्देह अलंकार में आवश्यक तत्व है – विषय का अनिश्चित ज्ञान। यह अनिश्चित समानता पर निर्भर हो। अनिश्चय का चमत्कारपूर्ण वर्णन हो।

उदाहरण – *यह काया है या शेष उसी की छाया।*
क्षण भर उनकी कुछ नहीं समझ में आया।

स्पष्टीकरण – दुबली-पतली उर्मिला को देख कर लक्ष्मण यह निश्चय नहीं कर सके कि यह उर्मिला की छाया है या उसका शरीर। यहाँ सन्देह बना है।

उदाहरण – *कैंधों ब्योम बीथिका भरे हैं भूरि धूमकेतु,*
कैंधों चली मेरु तैं क़सानुसरि भारी हैं।

स्पष्टीकरण – लंकादहन के उपर्युक्त वर्णन में हनुमान की पूँछ को देखकर यह निश्चय नहीं हो पा रहा है कि आकाश में अनेक पुच्छल तारे हैं या पर्वत से अग्नि की नदी-सी निकल रही है। अत: यहाँ सन्देह अलंकार है।

संदेह अलंकार के अन्य उदाहरण –

(1) सारी बीच नारी है, कि नारी बीच सारी है,
कि सारी ही की नारी है, कि नारी ही की सारी है?

(2) मद भरे ये नलिन नयन मलीन हैं।
अल्प जल में या विकल लघु मीन हैं।

(3) वह पूर्ण चन्द्र उगा है या सिकी सुन्दरी का मुखड़ा।

@ASK_Classes

कहानी	10	उपन्यास
1.कहानी को पढ़ने में कम समय लगता है		उपन्यास को पढ़ने में ज्यादा समय लगता है
2.कहानी का क्षेत्र सीमित होता है		उपन्यास का क्षेत्र व्यापक होता
3.कहानी में पात्रों की संख्या कम होती है		उपन्यास में पात्रों की संख्या अधिक होती है

@ASK_Classes

Que : 40. लुट्टन पहलवान की मेलों में कया वेशभूषा रहती थी?

Answer:

लुट्टन की वेशभूषा- लम्बा चोगा, अस्त-व्यस्त पगड़ी बांधे मतवाले हाथी की तरह झूमता रहता था लुट्टन।

@ASK_Classes

Did you mean: ***takniki*** Shabd Kise Kahate Udaharan sahit

12

हिंदी में खोजें तकनीकी शब्द किसे कहते हैं उदाहर...

इसे सुनें

किसी भी विषय से सम्बन्धित ऐसे शब्द जिनका प्रयोग मुख्य रूप से उस विषय की चर्चा के लिए ही होता है तकनीकी शब्द कहलाते हैं। इन्हें पारिभाषिक शब्द भी कहते हैं। जैसे भौतिक विज्ञान में "गुरुत्वाकर्षण", "वेग", "त्वरण", "आवृत्ति" आदि शब्द। 21 Feb 2021

https://hi.quora.com › तकनीकी-...

तकनीकी शब्द किसे कहते हैं? हिन्दी भाषा में प्रयुक्त कुछ उदाहरण सहित समझाइए। - Quora

About featured snippets Feedback

People also ask

अनुबंध तकनीकी शब्द है क्या?

5 क्षेत्रीय शब्द क्या है?

शब्द क्या है उदाहरण सहित लिखिए?

@ASK_Classes

W https://hi.m.wikipedia.org › wiki

लोकोक्ति - विकिपीडिया

About featured snippets · Feedback

13

People also ask

लोकोक्ति क्या है उदाहरण सहित लिखिए?

दूसरे शब्दों में- जब कोई पूरा कथन किसी प्रसंग विशेष में उद्धत किया जाता है तो **लोकोक्ति** कहलाता है। इसी को कहावत कहते है। **उदाहरण**- 'उस दिन बात-ही-बात में राम ने कहा, हाँ, मैं अकेला ही कुँआ खोद लूँगा। ... '**लोकोक्ति**' शब्द 'लोक + उक्ति' शब्दों से मिलकर बना है जिसका अर्थ है- लोक में प्रचलित उक्ति या कथन'।

7 Dec 2020

https://brainly.in › question

लोकोक्ति से क्या अभिप्राय है ? उदाहरण सहित लिखिए। - Brainly.in

MORE RESULTS

दस लोकोक्तियों का अर्थ लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए?

@ASK_Classes

1 Answer

14

+1 vote

answered May 4 by SaanviDebnath (75.4k points)
selected May 5 by Tanishapoojary

'अतीत में दबे पाँव' शीर्षक पाठ में लेखक के वे अनुभव हैं जो उसे सिंधु घाटी की सभ्यता के अवशेषों को देखते समय हुए थे। उस सभ्यता के अतीत में झाँककर वहाँ के निवासियों और उनके दि जाता है कि वहाँ की सड़कें, नालियाँ, स्तूप, अन्नभण्डार, स्नानागार, कुएँ, कुंड, अनुष्ठान गृह आदि किस तरह से सुव्यवस्थित तरीके से बनाए गए थे।

इन सबको सुव्यवस्थित देखकर लेखक को महसूस होता है कि जैसे अब भी वे लोग वहाँ हैं। किसी खण्डहर में प्रवेश करते हुए उस अतीत में निवासियों की उपस्थिति महसूस होती है। यदि उन लोगों की सभ्यता नष्ट नहीं हुई होती तो वे पाँव प्रगति के पथ पर निरंतर बढ़ते ही रहे होते। परन्तु दुर्भाग्यवश ये प्रगति की ओर बढ़ रहे सुनियोजित पाँव अतीत में ही दबकर रह गए। इन आधारों पर कहा जा सकता है कि 'अतीत में दबे पाँव' शीर्षक पूर्णतः सार्थक, रोचक और सटीक हैं।

comment

@ASK_Classes

Google

Vishesh lekhan ki suchnaon ke kshetron ke

All Images Videos News Shopping Books Maps Fli

Did you mean: Vishesh lekhan ki suchnaon ke ***kshetra*** ke bare mein likhiye

हिंदी में खोजें विशेष लेखन की सूचना के क्षेत्रों के ...

15

इसे सुनें

उत्तर:विशेष लेखन के अंतर्गत रिपोर्टिंग के अलावा उस विषय या क्षेत्र विशेष पर फीचर, टिप्पणी, साक्षात्कार, लेख, समीक्षा और स्तंभ-लेखन भी आता है। इस तरह का विशेष लेखन समाचार-पत्र या पत्रिका में काम करने वाले पत्रकार से लेकर फ्री-लांस (स्वतंत्र) पत्रकार या लेखक तक सभी कर सकते हैं। 11 Oct 2020

https://brainly.in › question

विशेष लेखन हेतु सूचनाओं के स्रोत है - - Brainly.in

About featured snippets Feedback

National Council of Educational Research and Training

https://ncert.nic.in › kham105 PDF

विशेष लेखन - स्वरूप और प्रकार

लेकिन विशेष लेखन सिर्फ़ विशेषीकृत रिपोर्टिंग भी नहीं है। विशेष

@ASK_Classes

17

प्रश्न:- जैनेन्द्र कुमार का साहित्यिक परिचय निम्न बिन्दुओं के आधार पर दीजिए-
(i) दो रचनाएँ (ii) भाषा-शैली (iii) साहित्य में स्थान-

उत्तर- (i) दो रचनाएँ :- परख, सुनीता, फाँसी, एकरात

(ii) भाषा-शैली :-

जैनेन्द्र जी की भाषा दो रूप मे देखने को मिलते हैं- पहला रूप उपन्यासों और कहानियों मे देखने को मिलता है जो सरल व सहज है। दूसरा रूप निबन्धों में देखने को मिलता है जिनमें विचार

@ASK_Classes

(ii) भाषा-शैली :-

जैनेन्द्र जी की भाषा दो रूप में देखने को मिलते हैं- पहला रूप उपन्यासों और कहानियों में देखने को मिलता है जो सरल व सहज है। दूसरा रूप निबन्धों में देखने को मिलता है जिनमें विचार और चिंतन की प्रधानता है आपकी भाषा में अरबी, फारसी, उर्दू, संस्कृत व अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग हुआ है।

जैनेन्द्र जी की शैली में विवेचनात्मक शैली, वर्णात्मक शैली, भावात्मक शैली व मनोविश्लेषणात्मक शैली का विशेष रूप से प्रयोग है।

@ASK_Classes

(iii) साहित्य में स्थान :-

श्रेष्ठ उपन्यासकार, कहानीकार, एवं निबंधकार जैनेन्द्र कुमार अपनी चिन्तन विचारधारा आध्यात्मिक और सामाजिक विश्लेषणों के लिए सदा स्मरणीय रहेंगे। हिन्दी साहित्य में इनका स्थान प्रमुख रहेगा। लेखन कला एवं भाषा पारदर्शिता के कारण इनका विशेष महत्व है।

@ASK_Classes

कलापक्ष- बच्चन की भाषा सीधी सादी और जीवंत है। भाषा सर्वग्राह्य, गेय शैली में संवेदनासिक्त अभिधा के माध्यम से पाठकों में सीधा संवाद करता है।

सामान्य वोलचाल की भाषा को काव्य गरिमा प्रदान करने का श्रेय बच्चन को जाता है, आपने अपने काव्यपाठ से कवि सम्मेलन की परम्परा को सुदृढ़ किया और जनप्रिय वनाया है।

2. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का साहित्यिक परिचय निम्न लिखित बिन्दुओं के आधार पर लिखिए-

(क) कोई दो रचनाएँ (ख) भावपक्ष, कलापक्ष (ग) साहित्य में स्थान

उत्तर- रचनाएँ- अनामिका, परिमल, गीतिका, सरोज-स्मृति, कुकुरमुत्ता।

भावपक्ष- रूढ़ियों के सख्त विरोधी निराला जी ने अपनी सर्जना के माध्यम से नयी क्रांति पैदा की थी। आपके काव्य में स्थापित मूल्यों के प्रति विद्रोह का स्वर उभरा है। आपके काव्य में ओज, राष्ट्र-प्रेम, आध्यात्म, रहस्य एवं समाजवादी चिंतन आदि की झलक मिलती है।

कलापक्ष- आपकी भाषा धारा प्रवाह शुद्ध खड़ी वोली है। आपने मुक्त छंद का विकास कर आधुनिक हिन्दी कविता को एक नई राह प्रदान की। प्रगतिवाद और रहस्यवाद की नयी-नयी अभिव्यंजनाओं को आपने प्रस्तुत किया है। आपकी छंद योजना निराली ही है।

साहित्य में स्थान- हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने में आपका विशेष योगदान रहा है। मुक्त छंद के आविष्कारक निराला को हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान प्राप्त है।

3. रघुवीर सहाय का साहित्यिक परिचय निम्न लिखित बिन्दुओं के आधार पर लिखिए-

(क) कोई दो रचनाएँ (ख) भावपक्ष, कलापक्ष (ग) साहित्य में स्थान।

उत्तर- कवि रघुवीर सहाय का जन्म 9 दिसम्बर 1929 को लखनऊ (उ.प्र.) में हुआ था। आकाशवाणी, दूरदर्शन में काम करने के साथ-साथ आपके कल्पना, दिनमान और दैनिक नवभारत टाइम्स में भी काम किया। सन् 1990 में उनका निधन हुआ।

प्रमुख रचनाएँ- आत्महत्या के विरुद्ध, हँसों-हँसों जल्दी हँसों, सीढ़ियों पर धूप (काव्य संग्रह) रास्ता इधर से है (कहानी), लिखने का कारण (निवन्ध)।

भावपक्ष- रघुवीर सहाय एक कथाकार, कवि और पत्रकार थे, इसलिये उनके साहित्य में वर्तमान की वास्तविकता है। जातीय या वैयक्तिक स्मृतियाँ उनके काव्य में नहीं के बराबर हैं। छंदानुशासन के लिहाज से भी वे अनुपम हैं।

कलापक्ष- रघुवीर सहाय की रचनाओं में सहज शैली उनके व्यक्तित्व का परिचायक है। कविता में भी नाटकीय शैली का प्रयोग उनकी भाषा को अत्यन्त सरल, सहज बनातीं है। 'कोष्ठांकित' वाक्यों का प्रयोग करना एक नया प्रयोग है। प्रस्तुत कविता में हृदयहीन कार्यशैली का प्रयोग है।

साहित्य में स्थान- रघुवीर सहाय हिन्दी के प्रबल पक्षधर हैं। हिन्दी साहित्य में उन्होंने अपना अलग मुकाम बनाया है।

4. तुलसीदास का साहित्यिक परिचय निम्नलिखित के आधार पर लिखिए-

(क) कोई दो रचनाएँ (ख) भावपक्ष, कलापक्ष (ग) साहित्य में स्थान।

उत्तर-रचनाएँ- रामचरित मानस, दोहावली, कवितावली, विनय पत्रिका आदि।

भावपक्ष- तुलसी साहित्य में लोकहित, लोकमंगल की भावना सर्वत्र मुखर है। आप राम के अनन्य भक्त है। आपके काव्य में समन्वयवादी दृष्टिकोण दार्शनिकता है। आप रससिद्ध कवि है।

कला पक्ष- तुलसी ने अपने समय में प्रचलित अवधि और ब्रज-भाषा को अपनाया। यद्यपि उन्होंने संस्कृत शब्दों का प्रचुरता से प्रयोग किया है तथापि कहीं वह बोझिल तथा दुरूह नहीं हो पाई। अलंकारों एवं रसों के सहज प्रयोग से रचनाएँ प्रभावोत्पादक वन गई है। छन्द योजना में दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैया आदि का प्रयोग किया है।

साहित्य में स्थान- तुलसी ने अपनी अप्रतिम काव्य अप्रतिभा से साहित्य का गौरव बढ़ाया है। तुलसीदास महान समन्वयकारी कवि थे। उन्हें साहित्य के आकाश का चन्द्रमा कहा गया है।

26. निम्नलिखित कथन का सार संक्षेपण में लिखिए।

"जिस व्यक्ति को अपने देश की भाषा का ज्ञान नहीं है, अपने रीति-रिवाजों और परंपराओं का परिचय नहीं, अपने देश की कला के प्रति आदर नहीं है और जो अपनी धार्मिक, आध्यात्मिक, निधि से गौरवान्वित नहीं है, वह निश्चित तौर पर नर नहीं, नर पशु है"।

उत्तर- सार संक्षेपण- एक समग्र भाव से पूर्ण अवतरण का पुनः सर्जन है- सार संक्षेपण। उसमें मूल अवतरण की सभी आवश्यक बातों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें क्रमबद्धता, स्पष्टता और प्रवाह होना आवश्यक है। इसका आकार मूल अवतरण का 1/3 होता है। एक प्रकार से संक्षेपण मूल रचना का पुनः सर्जन है।

27. कंप्यूटर शिक्षकों की आवश्यकता हेतु एक विज्ञापन बनाइए।

@ASK_Classes

4. गद्यांश में प्रयुक्त एक शब्द युग्म लिखिए।

उत्तर- बार-बार।

(3) वर्तमान दौर में किसी भी आयु वर्ग को असफलता सहज स्वीकार्य नहीं होती, किंतु यह स्थिति किशोरावस्था और युवावस्था में बेहद संवेदनशील होती है जब किसी युवा को लगता है कि वह अपने अभिभावकों के स्वप्न को साकार नहीं कर पाएगा तो वह नकारात्मक सोच में डूब जाता है इस तरह की परिस्थिति उसे कहीं न कहीं कोई नकारात्मक कदम उठाने के लिए विवश करती है। ये सच है कि युवावस्था उम्र का संक्रमण काल है। इस समय उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है खासतौर से करियर, जॉब, रिश्ते, व्यक्तिगत समस्याएँ आदि। हर युवा को चाहिए कि यदि उसकी जिंदगी में किसी प्रकार की परेशानी है जो बेचैन करती है तो उसे अपने दोस्तों, परिवार वालों के साथ शेयर करें। यदि समस्या है तो समाधान भी है। कभी कोई घातक कदम उठाने की कोशिश न करें। याद रखिए कि हमारी जिंदगी सिर्फ हमारी नहीं है उसके साथ कई लोगों की उम्मीदें और भावनाएं जुड़ी हुई हैं। कठिनाई का सामना करके उसे हल किया जाता है। पलायन किसी समस्या का समाधान नहीं है।

प्रश्न

1. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

उत्तर- जीवन संघर्ष का नाम है, पलायन नहीं।

2. युवाओं पर सामान्य तौर से क्या दबाव होता है।

उत्तर- कैरियर, जॉब, रिश्ते तथा व्यक्तिगत समस्या।

3. 'रक्षक' शब्द का विलोम गद्यांश से लिखिए।

उत्तर- भक्षक।

4. पलायन का समानार्थी लिखिए।

उत्तर- पलायन।

(4) भारत की भौगोलिक संरचना के कारण यहां की जलवायु में विविधता देखने को मिलती है। भारत जो तीन ओर पूर्व पश्चिम व दक्षिण में क्रमशः बंगाल की खाड़ी, अरब सागर और हिंद महासागर से घिरा है वही उत्तर में हिमालय की बर्फीली पर्वत चोटियाँ मस्तक उठाए हैं फलस्वरुप कहीं अधिक ग्रीष्म तो कहीं अधिक शीत तो कहीं अधिक वर्षा ऋतु होती है जलवायु की विविधता के कारण यहां के लोगों की जीवनशैली, भाषा भी प्रभावित होती है। प्रत्येक राज्य की अपनी अलग भाषा मराठी, गुजराती, तमिल, कन्नड़ आदि है। उनकी संस्कृति भिन्न है प्रारंभ में विदेशी आक्रमणों के कारण यहां अनेक धर्म सनातन धर्म के अतिरिक्त इस्लाम यहूदी, जैन पारसी, बौद्ध आदि हैं। इन विविधताओं के बावजूद भारत में राष्ट्रीय एकता प्रत्येक राज्य में दृष्टिगोचर होती है। भारत भूमि को माता की संज्ञा दी गई है। कहा भी गया है कि जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान है। भारत के प्रत्येक राज्य विभिन्न विविधताओं के कारण उत्पन्न समस्याओं में मदद के लिए परस्पर तैयार रहते हैं। सभी धर्म भाषा व जाति के लोग एक दूसरे का सम्मान करते हैं और राष्ट्र की रक्षा-सुरक्षा के लिए एकजुट होकर आगे आते हैं।

प्रश्न

1. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

उत्तर- विविधता में एकता।

2. जलवायु विविधता का क्या परिणाम होता है?

उत्तर- जलवायु की विविधता के कारण यहां के लोगों की जीवनशैली, भाषा भी प्रभावित होती है।

3. सनातन का समानार्थी लिखिए।

उत्तर-सनातन

(5) भारतीय संस्कृति में पर्व का अत्यधिक महत्व है। पर्व किसी संस्कृति के वह अंग है। जिनके बिना वह संस्कृति अधूरी रह जाती है। पर्व हमें ऐसा अवकाश प्रदान करते हैं कि हम अपने जीवन के विषय में अच्छा सोच सकते हैं। जिंदगी की भाग दौड़ के बीच ये हमें ऐसे पल प्रदान करते हैं जब हम अपने विषय में कुछ अच्छा सोच सकते हैं। जीवन प्रवाह को सही दिशा देने वाले पर्व ही होते हैं। जीवन व्यवहार की समस्त कटुताएँ भी पर्व के द्वारा ही समाप्त हो जाती हैं। ये जीवन में ऊर्जा प्रदीप्त करते हैं रिश्तो में मधुर रस घोलते हैं प्रेम सद्भावना जीवन में नियोजित करते हैं तथा ज्ञान, आचरण, विश्वास को परिमार्जित करने का प्रयास करते हैं अतः सभी धार्मिक राष्ट्रीय पर्वो को उल्लास के साथ मर्यादा में रहकर मनाना चाहिए। यह सदैव ध्यान रखना चाहिए कि हमारे आनंद के कारण किसी और को किसी भी तरह की तकलीफ न पहुँचे। अपने आनंद में अधिक से अधिक लोगों को शामिल करना अपने आनंद को बांटना ही किसी भी पर्व का असली उद्देश्य होना चाहिए।

प्रश्न-

1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

उत्तर- भारतीय संस्कृति में पर्व की महत्ता।

2. पर्व का असली उद्देश्य क्या है? लिखिए।

उत्तर- जीवन प्रवाह को सही दिशा देने वाले पर्व ही होते है। जीवन व्यवहार की समस्त कटुताएँ भी पर्व के द्वारा ही समाप्त हो जाती हैं।

3. 'परिमार्जित' का समानार्थी लिखिए।

उत्तर- मांजा हुआ।

(6) स्वच्छता हमारी दिनचर्या का महत्वपूर्ण अंग है स्वच्छ शरीर में स्वच्छ आत्मा का निवास होता है। स्वच्छता

हैं। वे लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं। जिसका मतलब है कि कपट बढ़ाते हैं। कपट की बढ़ती का अर्थ परस्पर में सद्भाव की घटी।

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'आरोह भाग-2' में संकलित और जैनेन्द्र कुमार द्वारा रचित 'बाज़ार दर्शन' से उद्धृत है।

प्रसंग- लेखक के अनुसार बाज़ार और ग्राहक की सार्थकता केवल प्रयोजनीय वस्तुओं के खरीदने पर ही हो सकती है अनावश्यक वस्तुएँ खरीदकर हम अपना और बाज़ार का नुकसान ही करते हैं।

व्याख्या- लेखक के अनुसार बाज़ार में जादुई ताकत हमें अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। इससे हम उसके गुलाम बन जाते हैं, किन्तु बाजार की सार्थकता तभी है जब हम अपनी आवश्यकताओं को ठीक-ठीक समझकर बाज़ार का उपयोग करें। इसके विपरीत जो मनुष्य अपने पैसे के बल पर ही अनावश्यक रूप से सामान खरीदते हैं, वे केवल बाज़ार के विनाशक शक्ति, शैतानी शक्ति या व्यंग्य की शक्ति ही बाज़ार को देते हैं। इससे बाज़ार में अस्थिरता आती है और मनुष्य न तो अपना ही लाभ ले सकते हैं और न ही बाज़ार को लाभ प्रदान कर सकते हैं। इससे बाज़ारवाद को ही बढ़ावा मिलता है। यह बाज़ारवाद लोगों में कपट की भावना बढ़ाता है, जिसके फलस्वरूप लोगों में आपस में प्रेम, सौहार्द, सहानुभूति आदि सद्भावनाएँ कम होती जाती हैं।

5. जाड़े का दिन। अमावस्या की रात-ठंडी और काली मलेरिया और हैजे से पीड़ित गाँव भयानं शिशु की तरह थर-थर काँप रहा था। पुरानी और उजड़ी बाँस-फूस की झोपड़ियों में अंधकार और सन्नाटे का सम्मिलित साम्राज्य! अंधेरा और निस्तब्धता। अंधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी। निस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं। आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।

सन्दर्भ- उपरोक्त पंक्तियां फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा रचित 'पहलवान की ढोलक' नामक पाठ से ली गई है।

प्रसंग- इन पंक्तियों में लेखक ने गांव की गंभीर स्थिति का वर्णन किया है।

व्याख्या- अमावस्या की काली ठंडी रात में मलेरिया और हैजे से पीड़ित होने के कारण गांव थर-थर काँप रहा था। महामारी से पीड़ित लोगों की तकलीफें रात्रि में बढ़ जाती थी। लोगों के घर किसी की मृत्यु हो जाती थी, अतः लोगों की करुण सिसकियों और आहों को लेखक ने रात का आँसू बहाना कहा है। रात्रि की निस्तब्धता, सियारों का क्रंदन और पेचक की डरावनी आवाज से भंग हो जाती थी। इस गाँव का पीड़ा और मुसीबतों का हृदय विदारक वर्णन किया गया है।

6. रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही ललकारकर चुनौती देती रहती थी। पहलवान संध्या से सुबह तक, चाहे जिस खयाल से ढोलक बजाता हो, किंतु गाँव के अर्द्धमृत, औषधि उपचार- पथ्य-विहीन प्राणियों में वह संजीवनी शक्ति ही भरती थी। बूढ़े बच्चे जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था। स्पंदन शक्तिशून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी। अवश्य ही ढोलक की आवाज में न तो बुखार हटाने का कोई गुण और न महामारी की सर्वनाश शक्ति को रोकने की शक्ति थी, पर इसमें संदेह नहीं कि मरते हुए प्राणियों को आँख मूंदते समय कोई तकली एक-एक बार मुझे मालूम होता है कि यह सिर्फ एक अद्भुत अवधूत है। दुख हो या सुख, वह हार नहीं मानता। न ऊधो का लेना, न माधो का देना। जब धरती और आसमान जलते रहते हैं, तब भी यह हज़रत ना जाने कहाँ से अपना रस खींचते रहते हैं। मौज में आठों याम मस्त रहते हैं। एक वनस्पति शास्त्री ने मुझे बताया कि यह उस श्रेणी का पेड़ है जो वायुमंडल से अपना रस खींचता है। जरूर खींचता होगा। नहीं, तो भयंकर लू के समय इतने कोमल तंतु जाल और ऐसे सुकुमार केसर को कैसे होगा सकता था?

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'आरोह भाग-2' में संकलित 'पहलवान की ढोलक' नामक प्रतिनिधि कहानी से उद्धृत है। इसके लेखक फणीश्वर नाथ रेणु जी है।

प्रसंग- गाँव में पहले अनावृष्टि, फिर अन्न की कमी, उसके बाद मलेरिया और हैज़े ने मिलकर हमला बोल दिया। फलस्वरूप गाँव में प्रतिदिन दो-तीन लाशें उठने लगीं। लोगों की शक्ति जवाब दे चुकी थी। ऐसे में केवल लुट्टन सिंह पहलवान ढोलक बजाकर लोगों में स्फूर्ति भरने का प्रयास करता था।

व्याख्या- गाँव में हैजे और मलेरिया की विभीषिका फैल चुकी थी। लोगों की शक्ति इस प्रकार टूट चुकी थी कि वे अपने परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु पर रो भी नहीं पाते थे। ऐसे समय में केवल लुट्टन सिंह पहलवान रात्रि में ढोलक बजाता रहता था। ऐसा लगता था मानो वह उस विभीषिका को ललकारकर चुनौती दे रहा हो। हालांकि लुट्टन सिंह भी इससे हताश हो चुका था, फिर भी उसके ढोलक की आवाज़ गाँव के सभी लोगों में संजीवनी शक्ति के समान कार्य करती थी। इससे गाँव के अर्द्धमृत और दवाई और चिकित्सा से विहीन लोगों में एक नई स्फूर्ति भरती थी। उस ढोलक की आवाज़ सुनकर ऐसा लगने

@ASK_Classes

9. नगर पालिका अध्यक्ष को जल की अनियमित आपूर्ति के संबंध में शिकायती पत्र लिखिए।

उत्तर- प्रति,

नगर पालिका अध्यक्ष महोदय,

नगरपालिका खण्डवा (म.प्र.)

विषय- जल की अनियमित आपूर्ति के सम्बन्ध में शिकायती पत्र।

महोदय,

मैं सरदार पटेल मार्ग, वार्ड क्रम. 34 का रहवासी हूँ, विगत कुछ दनों से हमारे वार्ड में जल की आपूर्ति ठीक से नहीं हो रही है, जिसके कारण पेयजल संकट उत्पन्न हो रहा है। इसका कारण है जल की अनियमित आपूर्ति। हमारा आपसे निवेदन है कि जल की नियमित आपूर्ति की व्यवस्था करें।

धन्यवाद

दिनांक   शिकायतकर्ता

@ASK_Classes